प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

कश्मीर छाया रहा पंतनगर की काव्य गोष्ठी में

पंतनगर। १० सितम्बर, २०१५। पंतनगर विश्वविद्यालय के प्रकाशन निदेशालय द्वारा आयोजित किये जा रहे हिन्दी सप्ताह के अंतर्गत कल सायं एक काव्य गोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसमें पंतनगर सहित आस-पास के क्षेत्र, यथा काशीपुर, गदरपुर, रूद्रपुर, किच्छा, लालकुआँ, हल्द्वानी, इत्यादि के प्रख्यात कवियों ने भागीदारी की। सायं ५:०० बजे से प्रारम्भ हुई यह गोष्ठी लगभग ७:३० बजे रात्रि तक अनवरत चलती रही तथा श्रोता मंत्रमुग्ध होकर कवियों द्वारा प्रस्तुत विभिन्न रसों का पान करते रहे। अधिकतर कवियों की रचनाएं कश्मीर पर केन्द्रित रहीं।

काव्य गोष्ठी का प्रारम्भ हल्द्वानी की कवियत्री एवं शिक्षिका, डा. विमला जोशी द्वारा गायी गयी सरस्वती वंदना से हुआ, जिसके बाद अलग-अलग कवियों ने अपनी रचनाएं प्रस्तुत कीं। काव्य गोष्ठी के समन्वयक पंतनगर के श्री के.पी. सिंह 'विकल' ने हिन्दी सप्ताह का प्रतिनिधित्व करती कविता "हमारी जान है, ईमान है, पहचान है हिन्दी। यहां के नौजवानों की मधुर मुस्कान है हिन्दी।।" से अपना काव्य पाठ प्रारम्भ किया, जबकि गोष्ठी का संचालन कर रहे काशीपुर से आए प्रख्यात कवि एवं पंतनगर के पूर्व छात्र, डा. मनोज आर्या, ने आज की सियासत पर तंज करते हुए शेर "हम तो यूंही पूछ बैठे सात दशकों का हिसाब, आप नेता जी भला क्यूं इतना हकलाने लगे।" से अपनी शायरी की शुरूआत की। लालकुआँ से आए सतपाल सिंह 'सजग' ने पंतनगर के प्रख्यात किसान मेले का सजीव चित्रण अपनी कविता "साजन मैं भी चलूंगी, इस बार किसान मेला पंतनगर" से कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। सुल्तानपुर पट्टी के जाने-माने कवि खालिद सुल्तानपुरी ने अपने आशिकाना अंदाज़ की शायरी करते हुए "तुम्हें अच्छा लगे जो भी उसी में आके रह लेना, हमारे दिल के कई कमरे बहुत दिन से खाली हैं।" से श्रोताओं का दिल जीता। पंतनगर के डा. ओम शंकर मिश्रा ने अपने चिर-परिचित हाव-भावों से कविता करते हुए कहा "फ़िक्र में जीना छोड़ दो जिगर में दम रखो। आफ़तें भी अब कहर ढा रही हैं कमंडल खाली क्यूं है बम रखो।", जिसका श्रोताओं ने ताली बजाकर स्वागत किया। डा. विमला जोशी की कविता "मन की पीड़ा व्यक्त करूं क्या, शब्दों के अंगारों से। आज व्यथित है मानवता फिर, क्रूर बने इन मक्कारों से।।" को भी श्रोताओं की सराहना मिली। बाजपुर से आये तकी बाजपुरी, गदरपुर के सुबोध कुमार शर्मा एवं बलदेव राज अरोड़ा, किच्छा के सुभाष चन्द्र मिश्र एवं नवी अहमद मंसूरी, रूद्रपुर से आए उमाशंकर 'साहिल', काशीपुर के प्रख्यात कवि विवेक प्रजापति एवं अनिल सारस्वत तथा पंतनगर के सुरेश राजपूत एवं राधा बाल्मीकि ने भी अपनी हृदय स्पर्शी कविताओं से श्रोताओं को भाव-विभोर किया। डा. मनोज आर्या के संचालन को सभी ने सराहा।

अंत में काव्य गोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे डा. वीर सिंह, प्राध्यापक एवं निदेशक संचार, ने भी अपनी लोरी में लिखी कविता का पाठ किया। मंचासीन राजकीय कन्या इण्टर कालेज, पंतनगर, की अध्यापिका, श्रीमती अरूणा वर्मा, ने भी हिन्दी के प्रति अपने उद्गार प्रकट किये तथा प्रकाशन निदेशालय के इस प्रयास की सराहना की। काव्य गोष्ठी के आयोजक एवं प्रभारी अधिकारी प्रकाशन, डा. नरेश कुमार, ने सभी कवियों, मंचासीन अतिथियों एवं श्रोताओं का धन्यवाद करते हुए ऐसे प्रयासों को आगे भी बनाये रखने की बात कही।

चित्र सं.१. पंतनगर विश्वविद्यालय में हिन्दी सप्ताह के अंतर्गत आयोजित काव्य गोष्ठी में प्रतिभाग करने आए कवियों के साथ डा. वीर सिंह एवं डा. नरेश कुमार।

आलू की थोक कीमत ७५० रूपये प्रति कुन्तल तक रहने की संभावना

पंतनगर। १० सितम्बर, २०१६। आने वाले आलू के मौसम में, जनवरी-मार्च २०१७ के बीच, आलू की कीमत ६५० से ७५० रूपये प्रति कुन्तल के बीच रहने की संभावना है। यह पूर्वानुमान पंतनगर विश्वविद्यालय के कृषि अर्थशास्त्र विभाग के वैज्ञानिकों ने विश्वविद्यालय में चल रही 'नेटवर्क प्रोजेक्ट आन मार्केट इंटेलीजेंस' परियोजना के अन्तर्गत लगाया है। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य चुनी हुई कृषि जिन्सों के लिए बुवाई से पूर्व एवं फसल कटाई के दौरान कीमतों का पूर्वानुमान लगाना है। पंतनगर की परियोजना टीम ने परियोजनाधिकारी, डा. अनिल कुमार, के निर्देशन में हल्द्वानी नियमित कृषि उत्पादन मण्डी समिति, जो कि उत्तराखण्ड की एक प्रमुख मण्डी है, का बाजार सर्वेक्षण एवं पिछले १३ वर्षों की थोक कीमतों का विश्लेषण करने के पश्चात कीमतों का पूर्वानुमान लगाया है। विश्लेषण द्वारा यह ज्ञात हुआ है कि आलू की थोक कीमतें जनवरी से मार्च २०१७ के बीच रु. ६५० से रु. ७५० प्रति कुन्तल के मध्य रहने की संभावना है। यह पूर्वानुमान पिछले वर्षों के आंकड़ों तथा मॉडल पर आधारित है, अतः पूर्वनुमानित कीमतें बाजार की कीमतों से कम या ज्यादा भी हो सकती हैं। वैज्ञानिकों ने सलाह दी है कि जो किसान इस मौसम में आलू की फसल उत्पादित कर रहे हैं, वे आलू की खुदाई उपरोक्त पूर्वानुमानों एवं दूसरे कारकों को ध्यान में रखते हुए करें।

आलू की बुआई सितम्बर के अंत से प्रारम्भ होती है तथा नवम्बर तक चलती है तथा खुदाई जनवरी माह से प्रारम्भ होकर मार्च के अंत तक चलती है। नई फसल की आवक जनवरी से प्रारम्भ होकर मार्च तक चलती है। उसके बाद शीतगृहों से आलू की आवक आती है। व्यापारियों के किए गए सर्वेक्षण के अनुसार आलू के लिए हल्द्वानी बाजार में जनवरी, फरवरी एवं मार्च प्रमुख आवक के माह हैं तथा जून, जुलाई एवं अगस्त न्यूनतम आवक के माह हैं।